Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIV Issue – II March - April 2025

हिन्दी साहित्य में चित्रित भारतीय संस्कृति व समाज

सुमन कुमारी
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
महिला महाविद्यालय, झोझू कलाँ
जिला – चरखी दादरी (हरियाणा)

सारांश :–

हिन्दी साहित्य भारतीय संस्कृति और समाज का दर्पण है। इसमें समाज के विभिन्न पहलुओं, रीति–रिवाजों, मूल्यों और सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण किया गया है। यह साहित्य समाज में होने वाले बदलावों और संघर्षों को भी उजागर करता है। भारतीय समाज व संस्कृति अति प्राचीन और गौरवपूर्ण है। किसी भी समाज की संस्थाओं का स्वरूप और उसका संगठन उस समाज की संस्कृति द्वारा निर्धारित और संगठित होता है। यह साहित्य, समाज की सामाजिक, धार्मिक और नैतिक विचारधाराओं को अभिव्यक्त करता है और साहित्यकार सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए और उन्हें व्यापक रूप से फैलाने के लिए लेखन करते हैं। संस्कृति से ही किसी समाज में प्रचलित रीति–नीति तथा संस्कारों का बोध होता है। इन संस्कारों पर ही वहाँ के सामाजिक जीवन के आदर्श अवलंबित रहते हैं। संस्कृति मानव जीवन के विविध पक्षों में प्रतिबिंबित होती है। धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, नृत्य तथा कला इत्यादि इसको अभिव्यक्त करने वाने माध्यम है। अतः द्विवेदी जी संस्कृति व सभ्यता को भिन्न मानते हैं। ''सभ्यता समाज की बाहरी व्यवस्थाओं का नाम है और संस्कृति व्यक्ति के अंदर के विकास का।'' सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है। संस्कृति का संबंध मूल्यों से होता है। किसी भी देश, राष्ट्र की परिस्थितियों में आने से वहाँ प्रचलित सांस्कृतिक मूल्य भी प्रभावित होते हैं। भारत की संस्कृति में रीति–रिवाज, परम्परा, अनुष्ठान, खान–पान व पहनावा इत्यादि शामिल रहते हैं। सामाजिक विकास के साथ–साथ साहित्य की वृद्धि होती है और साहित्य का विकास समाज और संस्कृति को गति प्रदान करता है एवं उसे संस्कारित करता है। साहित्य समाज और संस्कृति की गतिशील प्रक्रियाओं का अंकन, लेखन व चित्रण है। साहित्य समाज के व्यक्तियों का नैतिक व मानसिक विकास करके उसे संस्कारवान बनाता है। साहित्य में बड़ी शक्ति होती है। वह युग परिवर्तन की क्षमता रखता है। राष्ट्र पर विपत्ति आने पर साहित्य उसमें जोश भरता है। इस प्रकार समाज और संस्कृति के परिवर्तन में साहित्य की अहम भूमिका रही है। हिन्दी का विकास संस्कृत भाषा में से

हुआ और वही संस्कृत की संस्कृति हिन्दी साहित्य में प्रतिबिम्बित हुई।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at http://www.goeiirj.com

मुख्य शब्द :– समाज, संस्कृति, साहित्य, मनुष्य।

प्रस्तावना :–

संस्कृति और समाज परस्पर निर्भर हैं। हर समाज की एक संस्कृति होती है जो समाज के सदस्यों का मार्गदर्शन करती है। समाज और संस्कृति के बीच के संबंध को समझने के लिए हमें यह जानना बहुत जरूरी है कि समाज आखिर है क्या ? राल्फ लिटन के अनुसार समाज व्यक्तियों का व्यवस्थित समूह ळै। संस्कृति किसी समाज के जिम्मेदार तथा समझदार लोगों की विशेषताओं का समुच्चय अथवा संकलन है। समाज का क्षेत्र बड़ा है तथा संस्कृति उसका एक महत्वपूर्ण घटक है। संस्कृति के माध्यम से समाज के लोग अपने जीवन को महसूस करते हैं। दूसरे शब्दों में समाज व्यक्तियों व उनके समूहों से मिलकर बनता है जबकि संस्कृति समाज में रहने वाले लोगों की व्यवहार पद्धतियाँ है जो उस समाज से जीवन से सीधे जुड़े हैं और उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। साहित्य के सामाजिक और रचनात्मक पक्षों के बीच आलोचक को सामाजिक दायित्व भी सामने आता है। यह भूमिका किसी रचना, रचनाकार या किसी भी ऐतिहासिक प्रकृति के मूल्यांकन तक सीमित नहीं रहती बल्कि उसके अन्तर्गत ऐतिहासिक प्रक्रिया के वर्तमान दौर के तमाम वैचारिक, राजनीतिक, भावनात्मक एवं मूल्यगत संघर्ष समाविष्ट हो जाते हैं। यदि यह सत्य है कि साहित्य जीवन के यथार्थ का प्रतिबिम्ब है तो आलोचक के लिए यह भी स्वाभाविक रूप से विचारणीय है कि रचनाकार यथार्थ को कितने प्रभावी ढ़ंग से दिखाने में सफल हुआ है। हिन्दी आलोचना के अतीत पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि भारतेन्दु युग में सामाजिक चिन्ता इसका मुख्य स्वर रहा है। हिन्दी आलोचना के विकास का युग स्वाधीनता का युग है। हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि आलोचना ही नहीं बल्कि नाटक, निबन्ध, कविता जैसी अनेक विधाओं के उदय के कारणों की व्याख्या करें तो हम पाएंगे कि इसके गहरे सरोकार थे। भारतीय नवजागरण का साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा, उसने साहित्य और समाज के रिश्ते को मजबूत किया। इस प्रक्रिया को समझने के लिए साहित्य की समाजशास्त्रीय पद्धति ही सर्वाधिक प्रभावशाली भूमिका हो सकती है। साहित्य में समाज की खोज का एक तीसरा पक्ष है – 'लेखक का व्यक्तित्व'। साहित्य के रूप में समाज की जो छाया प्रकट होती है वह लेखक के व्यक्तित्व के ही माध्यम से की जाती है। साहित्य के निर्माण में इस बीच की कड़ी – ''लेखक के व्यक्तित्व का बहुत बड़ा महत्व है। यह महत्व इस बात में है कि एक

ओर इसका सम्बन्ध समाज से है तो दूसरी ओर साहित्य से।'' साहित्य रचना की प्रक्रिया में समाज, लेखक और साहित्य परस्पर एक दूसरे को इस तरह प्रभावित करते हैं कि इनमें से प्रत्येक क्रमशः परिवर्तित और विकसित होता रहता है – ''समाज से लेखक, लेखक से साहित्य और साहित्य से पुनः समाज।'' हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति के चित्रण के कुछ मुख्य पहलू दर्शाए हैं – सामाजिक संरचना, साहित्य और समाज का संबंध, भारतीय संस्कृति का चित्रण, साहित्य और संस्कृति।

सामाजिक संरचना :–

हिन्दी साहित्य, भारतीय समाज की विभिन्न सामाजिक संरचनाओं को दर्शाता है जैसे कि जाति व्यवस्था, लिंग असमानता और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच का संबंध है। सामाजिक संरचना परस्पर क्रिया करती हुई सामाजिक शक्तियों का जाल है जिसमें अवलोकन एवं चिन्तन की विभिन्न प्रजातियाँ जन्म लेती हैं। सामाजिक संरचना समाज की विभिन्न इकाइयों, समूहों, संस्थाओं समितियों, सामाजिक सम्बन्धों से निर्मित एक प्रतिमानित एवं क्रमबद्ध ढ़ाँचा है। पारसन्स के अनुसार ''सामाजिक संरचना परस्पर सम्बन्धित समस्याओ , अभिकरणों, सामाजिक प्रतिमानों एवं साथ ही समूह के प्रत्येक सदस्य के द्वारा ग्रहण किए गए पदों व कायों की विशिष्ट क्रमबद्धता को कहते हैं।'' भारतीय समाज के जिन प्रतिमानों में परिवर्तन एवं रूपान्तरण हो रहा है, उनको स्पष्ट उपशीर्षकों के माध्यम से व्यक्त करना आवश्यक है। सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन के फलस्वरूप आज इस प्रकार के दार्शनिक मूल्य अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण हैं। भौतिकवादी संस्कृति के विकास के परिणामस्वरूप इस प्रकार के मूल्यों का खत्म होना स्वाभाविक माना जाता है। संरचना शब्द का प्रयोग 19वीं शताब्दी से ही मानव समाज के लिए किया जाता रहा है। उस समय से पहले इसका प्रयोग निर्माण या जीव विज्ञान जैसे अन्य क्षेत्रों में अधिक आम थो। कार्ल मार्क्स ने निर्माण को एक रूपक के रूप में इस्तेमाल किया है। जबकि समाज की मूल संरचना आर्थिक और भौतिक है , और यह संरचना शेष सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है, जिसे गैर–भौतिक, आध्यात्मिक या वैचारिक के रूप में परिभाषित किया गया है।

साहित्य और समाज :–

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है और यह समाज में हो रहे परिवर्तनों और उसकी भावनाओं का भी प्रतिबिम्ब है। आधुनिक काल से पहले ही भारतीय समाज अंधविश्वासों और कुप्रथाओं का शिकार बना हुआ था। 19वीं शताब्दी में ये अन्धविश्वास और कुप्रथाएं अपनी गहरी जड़े जमाए हुए थी। लोगों ने नारी जाति के प्रति सम्मान की भावना नहीं थी। स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी

और विधवाओं का पुनर्विवाह नहीं होता था। सती–प्रथा, बाल–विवाह तथा नर बलि की घटनाएं अक्सर होती रहती थी। समाज में छुआछूत की प्रथा काफी प्रबल थी। निम्न जातियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। हिन्दू समाज धार्मिक रूढ़ियों का भी शिकार बना हुआ था। ईसाई धर्म के प्रचारकों ने इन परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए पीड़ित निम्न जातियों के लागों को अपने धर्म की ओर आकर्षित किया।

फलस्वरूप छोटी जातियों के लोग ईसाई धर्म अपनाने लगे। अब हिन्दू समाज में भी जागरूकता उत्पन्न हुई और अनेक धार्मिक आन्दोलन आरम्भ हुए। धार्मिक और सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए सुधारवादी चेतना जागृत हुई और अनेक महान पुरूषों ने सामाजिक और धार्मिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया। मनुष्य परम्परा से सामाजिक चेतना को अपने प्रचलित वातावरण एवं समाज द्वारा हासिल करता है। प्राचीन सामाजिक मान्यताएँ कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से चली आती हैं। अपने समय की यथार्थ वास्तविकताओं ने ही उन मान्यताओं को जन्म दिया था। मनुष्य एक चेतनाशील प्राणी है इसलिए हर नयी पीढ़ी के अनुभवों से भिन्न रूप में प्रकट होता है। यथार्थ की जानकारी यथार्थ को बदलती है। फिर नये यथार्थ की नई जानकारी होती है। उस नयी जानकारी से नये यथार्थ का जन्म होता है। बीती हुई प्राचीन चेतना और परिवर्तित सामाजिक सम्बन्धों का स्वाभाविक तनाव ही कला के उद्‌गम का मूल स्त्रोत है। सामाजिक मान्यताएँ, कला के विभिन्न रूप–तत्वों के माध्यम से स्वयं को प्रस्तुत करती है। हम हैं, तो समाज है। समाज है तो साहित्य है। साहित्य है तो समाज में चेतना है अभी इसमें साँसे बाकी हैं।

इसी प्रकार हिन्दी साहित्य के प्रभाव को भी हिन्दुस्तान के इतिहास के साथ स्पष्ट देखा और अनुभव किया जा सकता है। साहित्य और समाज को कभी पृथक करके नहीं देखा जा सकता है। जो साहित्य सामाजिक दशा को प्रतिबिम्बित नहीं करता वह वैयक्तिक प्रतिक्रियाओं, कुंठाओं व मनोदशा का एकांत प्रलाप ही हो सकता है। सामाजिक अपेक्षाओं से रहित साहित्य चिरंजीवी व प्रभावशाली नहीं हो सकता है। ऐसा साहित्य जनमानस के लिए कौतूहल व मनोरंजन की सामग्री तो बन सकता है परन्तु समाज की आत्माभिव्यक्ति की लालसा को शांत नहीं कर पाता है। अतःसाहित्य और समाज का परस्पर अटूट संबंध है। साहित्य का सजृन मनुष्य द्वारा होता है। मनुष्य समाज के निर्माण की कड़ी है। उन्नत साहित्य और समाज दोनों की एक–दूसरे के पूरक हैं।

हिन्दी साहित्य अपनी समस्त विद्याओं के साथ देश की प्रगति की प्रत्येक कड़ी से जुड़ा हुआ है। साहित्य और समाज को कभी भी एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति का चित्रण :–

भारतीय संस्कृति का चित्रण और भी समृद्ध है। यह प्राचीन काल से ही अपने सांस्कृतिक मूल्यों, कला, साहित्य, संगीत और दर्शन के लिए जानी जाती है। भारत में विभिन्न धर्म, भाषाएं और रीति–रिवाज एक साथ रहते हैं जिससे यह देश विविधता में एकता का एक अद्भूत उदाहरण है। भारतीय संस्कृति को दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक माना जाता है। यह संस्कृति वैदिक काल से ही अपनी आध्यात्मिक और मान्यताओं के लिए जानी जाती है। भारत के विभिन्न धर्मों भाषाओं और संस्कृतियों के अनुयायी रहते हैं लेकिन वे सभी भारतीय संस्कृति के मूल्यों और सिद्धान्तों से जुड़े हुए हैं। यह विविधता में एकता की भावना ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

1. भारतीय संस्कृति समृद्ध और विविधतापूर्ण है जिसका इतिहास हजारों वषों तक फैला हुआ है।
2. भारतीय संस्कृति परम्पराओं, भाषाओं, धमों और कला रूपों का एक अनूठा मिश्रण है।
3. भारतीय संस्कृति में कई अलग–अलग धर्म, जाति, समुदाय पंथ आदि के लोगों के रहने के आद भी इसमें विविधता में एकता है।
4. अनेकता में एकता, निरंतरता, सहनशीलता, वसुधैवकुटुंबकम की भावना, आध्यात्मिकता और ग्रहणशीलता भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएं हैं।
5. भारतीय संस्कृति का मूल आधार आध्यात्मिकता है जो कि मूल रूप से धर्म, कर्म एवं ईश्वरीय विश्वास से जुड़ी हुई है।
6. भारतीय संस्कृति में लोगों के अंदर राष्ट्रीय एकता की भावना निहित है। राष्ट्र पर जब–जब कोई संकट आया है तब–तक भारतीयों ने एक होकर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी है।
7. भारतीय संस्कृति नैतिक और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देती है जिसमें विचार, शिष्टाचार, आदर्श, राजनीति, धर्म और बहुत कुछ शामिल है।
8. भारतीय संस्कृति में रह रहे अलग–अलग धर्म और जाति के लोगों को अपन परम्पराओं और रीति–रिवाजों को बनाए रखने की स्वतन्त्रता है।
9. भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। मानव का सम्पूर्ण सामाजिक पर्यावरण ही उसकी संस्कृति है। 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग कुछ निश्चित अर्थों में करते हैं, जैसे संस्कृति समस्त मानव जाति के तरीके या जीवन यापन या रहन–सहन के तरीके हैं या व्यवहार के प्रतिमान है जो एक समाज में विशिष्ट रूप में पाए जाते है या

व्यवहार करने के वे विशिष्ट तरीके हैं जो बड़े और जटिल रूप में संगठित समाज के विभिन्न भागों में विशेष रूप से पाए जाते हैं।

साहित्य और संस्कृति :–

संस्कृति शब्द अपने में सभी सामाजिक संस्कारों परम्पराओं, सभ्यता के विभिन्न तत्वों तथा लौकिक, आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं को समेटे हुए है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेद और स्मृतियाँ हैं, जिनके आधार पर हिन्दू समाज की सभी जातियाँ चल रही हैं। विदेशों में भारतीय संस्कृति, धर्म, भारतीय साहित्य दर्शन जीवन और मूल्यों के प्रति अनुराग के साथ हिन्दी साहित्य के शिक्षण के लिए बहुत ही बड़ी तादाद में लोग आतुर और प्रवृत हैं। विदेशों में हिन्दी साहित्य चाहे वो फिर मुशी प्रेमचन्द के बहुचर्चितगबन, गोदान, कायाकल्प, रंगभूमि एवं गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की गीतांजलि का हिन्दी अनुवाद किया गया है।

महाभारत, गीता एवं समचरित मानस को अनुवाद कर वे पढ़ रहे हैं। इससे वे भारतीय संस्कृति और साहित्य को नजदीक से जान पा रहे हैं। हिन्दी भाषा से विदेशों में शिक्षार्थी भारती की जड़ों और संस्कृति को सहज ही आत्मसात कर सकेंगे चाहे वे भारतवंशी हों या फिर विदेशी मूल के। विश्व में भारतीय भाषाओं के प्रचार और प्रसार में विदेशी और प्रवासी विद्वानों और साहित्यकारों के योगदान को भारतीय साहित्यकारों और हिन्दी प्रेमियों से कम नहीं आंका जा सकता। हिन्दी साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रवासी भारतीयों को जाता है। 'वसुधैवकुटंबकम' जो हमारी संस्कृति का मूल भाव है वह विदेशियों को बहुत आकर्षित करता है। हिन्दी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है।

विभिन्न देशों के हिन्दी लेखक एवं हिन्दी समाज भारत के हिन्दी समाज से जुड़ी हैं और परस्पर एक दूसरे के निकट आकर हिन्दी विश्व को स्थायित्व प्रदान करते हैं। हिन्दी साहित्य ने प्रदेश में रहते हुए स्वदेश को देखने का दृष्टिकोण बदला है और वहाँ की परिस्थितियों और जीवन के संघर्षों में परिवर्तन किया है। स्त्री पराधीनता के यथार्थ तथा आदिवासी संस्कृति के चित्रण भारतीय साहित्य में असंख्य है लेकिन क्या कोई इनकी संस्कृति की चिन्ता करता है, जबकि वे भारतीय संस्कृति के ही अंग हैं। पाण्डेय जी अत्यन्त आक्रोशित होकर सवाल करते हैं कि – ''क्या भारतीय समाज में स्त्री पराधीनता के यथार्थ और स्वाधीनता की आकांक्षा की अभिव्यक्ति को भी भारतीय संस्कृति के समाज शास्त्र में जगह मिलेगी या केवल सीता और सावित्री के पतिव्रत्य का गुणगान और सती की महिमा का मंडन ही होगा।

जिस प्रकार भक्तिकाल में सभी धर्म, संस्कृति और जातियों ने मिलकर उसे स्वर्ण युग के स्थान तक पहुँचाया था। आज भी कुछ आवश्यकता वैसी ही है यानि कि सर्वसमावेशी, सांस्कृतिक,

सामाजिक एकता की। भारतीय संस्कृति नृत्य, संगीत, कला, स्थापत्य और लोक कथाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भारत की विविध भाषाओं और संस्कृतियों के बावजूद एकता और समृद्धि का अनोखा संयोजन भारतीय साहित्य और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर विशेष और अद्वितीय बनाती है। भारतीय संस्कृति में साहित्य एक महत्वपूर्ण अंग है, जो समाज की सामाजिक, धार्मिकऔर नैतिक विचारधाराओं को प्रकट करता है। भक्ति आंदोलन और सूफी परम्पराओं के माध्यम से धार्मिक साहित्य का विकास हुआ।

आधुनिक काल में लेखकों ने सामाजिक सुधार, स्वतन्त्रता संग्राम और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के मुद्दों पर भी ध्यान केन्द्रित किया। भारतीय साहित्य और संस्कृति अत्यंत प्राचीन, विविध और समृद्ध है। भारतीय साहित्य की शुरूआत वेदों से मानी जाती है जो संस्कृत में लिखी गई धार्मिक और दार्शनिक रचनाएँ हैं। इसके बाद विभिन्न भाषाओं में महाभारत, रामायण और उपनिषद जैसे महाकाव्य रचे गए जो भारतीय संस्कृति की नींव बनाते हैं।

निष्कर्ष :–

हिन्दी साहित्य में चित्रित संस्कृति और समाज एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। साहित्य समाज की संस्कृति का दर्पण है, और चित्र, साहित्य की अभिव्यक्तियों को और भी स्पष्ट करते हैं। इन तीनों का आपस में एक जटिल और महत्वपूर्ण संबंध है जो किसी समाज के विकास और पहचान को आकार देता है।

वास्तविकता यह है कि समाज यदि उच्चता की ओर बढ़ता है तो साहित्य भी व्यापक चिंतन से पूर्ण हो जाता है। जब साहित्य व्यापक चिंतन और श्रेष्ठतम विचारों को अभिव्यक्त करता है तो संस्कृति भी व्यापक हो जाती है। यही समाज साहित्य और संस्कृति का अन्तर्सम्बन्ध है। जब–जब ये सकारात्मक चिंतन से पूर्ण होते हैं जब–जब व्यक्ति और समाज प्रगति के पथ पर चलते हैं और जब भी इनमें तारतम्य नहीं रहता, तब साहित्य और संस्कृति का पतन होने के कारण समाज का भी पतन होने लगता है। 19वीं सदी में नवजागरण की अवधारणा के कई आयाम दिखाई देते थे।

नवजागरण में ही राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ। नवजागरण काल में ही सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में सुधार–कार्य प्रारम्भ हुए। नवजागरण ने मानव समाज में एक ऐसी अवधारणा को विकसित किया जिसमें तार्किक विश्लेषण, मनुष्य में समानता मानव जीवन की वास्तविकता को लेकर नवीन मूल्य समाहित हुए थे। नवीन चेतना से प्रेरित होकर नवजागरण ने सभ्यता और संस्कृति का नए सिरे से मूल्यांकन किया। भारतीय समाज में हुए विभिन्न सुधार इसी मूल्यांकन के परिणाम थे।

संदर्भ सूची :–

1. मैनेजर पाण्डेय : साहित्य के समाज शास्त्र की भूमिका, पृ0 13
2. साहित्य शिक्षा और संस्कृति – आचार्य नरेन्द्र देव
3. निर्मला जैन : साहित्य का समाज शास्त्रीय चिन्तन
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका
5. मैनेजर पाण्डेय : साहित्य के समाज शास्त्र की भूमिका, पृ0 15
6. हिन्दी पुस्तक हेतु वेबसाइट सूची